

Vol 6 Issue 9 June 2017

ISSN No : 2249-894X

*Monthly Multidisciplinary
Research Journal*

*Review Of
Research Journal*

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinte Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
Awadhesh Kumar Shirotriya	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....



आधुनिक हिन्दी उपन्यास में नारी सशक्तिकरण

डॉ. मनोज आर. पटेल

आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज
नडियाद, गुजरात.



प्रस्तावना :

नारी सशक्तिकरण की चर्चा आज जोरों पर है। भारत सरकार ने वर्ष 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया था। नारी तो स्वयं एक शक्ति है तो फिर शक्ति का सशक्तिकरण क्या हो सकता है। हमारे यहाँ हिन्दू धर्म में दुर्गा—सप्तशती क्या है नारी शक्ति की विवेचना ही तो है। वैदिक काल में नारियों का अलग सम्मानित व्यक्तित्व और अस्तित्व था। नारी तब परिस्थितियों नारी के प्रतिकूल होती चली गई। समाज में पुरुष प्रधान व्यवस्था बनी, पुरुष हमारा मालिक बन गया और नारी के पास न शिक्षा थी, न स्वतंत्र नौकरी और न ही धन।

पर आज नारी पढ़—लिखकर स्वतंत्र है अपने अधिकारों के प्रति सजग भी है। आज के साहित्यकार भी नारी—विमर्श, दलित—नारी विमर्श एवं नारी—पुरुष के नये वैचारिक संबंध, नया तालमेल और व्यवहारिक रूप देने के लिए प्रयत्नशील है। आधुनिक उपन्यासकारों में प्रेमचंद से लेकर अब तक के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी शक्ति को उजागर किया है। प्रेमचंद नारी की विभिन्न समस्याओं को लेकर अत्याधिक चिंतित थे इसलिए उनके अनेक उपन्यासों में नारी की किसी न किसी समस्या का उल्लेख है। निर्मला, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, तथा कायाकल्प में नारी की प्रधान भूमिका है।

विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक ने भी अपने उपन्यासों में नारी मन और उसकी सामाजिक स्थिति का वर्णन किया है परन्तु वे उसके त्याग, वात्सल्य और अन्तर्वेदना को ही चित्रित कर सके हैं। यशपाल के उपन्यासों में 'दिव्या' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें नारी मात्र व्यक्तित्व है—भले—बुरे के संबंध में अपनी निर्णय—क्षमता है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में भी नारी को विशेष स्थान प्राप्त हुआ है इन्होंने मुख्यतः मनोवैज्ञानिक आधार पर ही नारी का चित्रण किया है। इनके चित्रण में नारी की समस्याओं का उल्लेख तो है लेकिन नारी की सशक्तिकरण की कोई चर्चा नहीं है अपितु उसकी त्रासदी का ही वर्णन है।

इसके बाद के उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती का 'दिलो—दानिश' उपन्यास नारी उत्पीड़न की एक नई गाथा कहता है। यहाँ 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' जैसी कोई बात नहीं बल्कि उसकी व्यथा ही, उसकी कथा है। कृष्णा सोबती स्वभावतः एक नारी होने के कारण नारी के मनोविज्ञान को ठीक से समझती है और वह यह भी जानती है, नारी चाहे जिस भूमिका में हो पत्नी या प्रेयसी—उपेक्षा और उत्पीड़न का आखेट होने के लिए वह विवश है। लेकिन 'अख्या' जो 'समय सरगम' की नायिका है, अविवाहित रहकर यह सिद्ध करती है कि पुरुष के बिना भी जीवन को अपनी शर्तों पर जीने में विश्वास करती है। धर्म, अध्यात्म और सामाजिक नियमों का उसके सामने कोई मूल्य नहीं है।

इस सन्दर्भ में शिवप्रसाद सिंह की 'औरत' उपन्यास भी उल्लेखनीय है। इसमें नारी के शोषण के साथ उसके बुद्धि—विवेक और साहस की भी कथा है। इस उपन्यास की पात्र सोना जिसको लोग सोनवां बोलते हैं वह औरतों के साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति का साक्षात् प्रतीक है जो आज की नारी के सशक्तिकरण का परिचायक है। मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में नारी को अपने लक्ष्य—प्राप्ति के लिए सजग दिखलाया गया है इसकी एक नारी—पात्र 'भूरी कज्जा' है जो देह—व्यापार करने के बावजूद समाज से लोहा लेने में पीछे नहीं हटती। हालांकि समाज उसे स्वीकारता नहीं और अंततः वह पुलिस की झूठी मुठभेड़ में मारी जाती है। फिर भी लेखिका ने नारी को अपने बदतर और बदनाम हालात में भी एक शक्ति के साथ प्रस्तुत किया है।

नारी सशक्तिकरण की दृष्टि में आधुनिक उपन्यासकार लेखिका चित्रा मुद्गल का 'आवा' उपन्यास भी द्रष्टव्य है। इसमें नमिता की कहानी ऐसी नारी की कहानी है जो अपने पैरों पर खड़ी होकर जीवन में कुछ करना चाहती है। हालांकि पुरुष प्रधान समाज में लेखिका ने नारी को समझौते के लिए विवश दिखलाया है।

नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था। आज स्थिति परिवर्तित हुई है आज हर क्षेत्र का द्वार लड़कियों के लिए खुला है। वे हर जगह प्रवेश पाने लगी हैं— जमी से आसमां तक— पृथ्वी से चाँद तक उनकी पहुँच है। नारी का जीवन तो निःसन्देह सेवा और समर्पण का सार है— लेकिन इस समर्पण को समझने वाला सहृदय पुरुष भी तो हो। नारी के समर्पण—सेवा की उपेक्षा कर, उसकी कोमल भावनाओं को उसकी विवशता समझ पुरुष समाज नारी के साथ न्याय

नहीं करके वह स्वयं अपनी मानसिक संकीर्णता का परिचय देता है।

आधुनिक युग की उपन्यास लेखिका में मृदुला गर्ग का नाम भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के शोषण उत्पीड़न के साथ-साथ यह भी दर्शाया है कि नारी चाहे देश की हो या विदेश की लेकिन वह केवल भोग्या ही है। इस सत्य के उद्घाटन के साथ-साथ लेखिका ने नारी की इस स्थिति से मुक्ति की तलाश भी की है। उनके 'कठगुलाब' उपन्यास का नाम इस प्रसंग में लिया जा सकता है। नारी सशक्तिकरण की दिशा में हिन्दी उपन्यास लेखिका उशा प्रियंवदा का नाम भी महत्वपूर्ण है। उनके उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारे' और 'शेष यात्रा' में नारी को ही केन्द्र बनाया गया है। एक में मध्यवर्गीय नारी सुशमा है तो दूसरे में अनु है जो आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। अनु जब समझ जाती है कि वह पुरुष (प्रणव) की मात्र भोग्या है, वास्तविक प्रेम नहीं है तो वह इस संबंध को ढोना नहीं चाहती और तलाक ले लेती है। कुछ इस तरह की मान्यता लेखिका प्रभा खेतान के उपन्यास 'अपने-अपने चेहरे' में भी दृष्टिगोचर होती है। जब नायिका रीतू अपना अपमान सह नहीं पाती। वह एक पढ़ी-लिखी नारी है जो किसी के अंगूठे के नीचे वह भी एक सौत की उपस्थिति में कदापि नहीं रह सकती और मायके चली आती है। यह बात अलग है कि फिर उसकी सौत को अपनी गलतियों का एहसास हो जाता है।

निष्कर्ष यह है कि आज की नारी को अपनी शक्ति का अनुमान हो चुका है। इस पहचान के लिए उसे किसी की प्रतीक्षा है न सहारे की कामना। वह पूर्ण संपूर्ण है, आत्मविश्वास से भरपूर, जिसका स्पष्ट रूप हिन्दी उपन्यासों में दिखाई देता है।



डॉ. मनोज आर. पटेल

आचार्य एवं अध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सी.बी. पटेल आर्ट्स कालेज नडियाद, गुजरात.

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005, Maharashtra
Contact-9595359435

E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com